बातें एक फ़क़ीर की..

श्री साईं अमृत कथा

'मैं' की क़ैद से निकलो

मैं मैं मैं समाया सारा,
मै ही मुझको सबसे प्यारा.
अपनों से मुझे दूर यह रखता,
मैं ही टूटता, मैं ही बिखरता.
मैं ने मुझको पकड़ रखा है,
बस बंधन में जकड़ रखा है.
मैं साँझ सवेरे मैं से लड़ता,
मुंह की खाता, गिर–गिर पड़ता.
उठता फिर कि इससे छूंटू,
जान बचाकर इससे भागूं.
मगर ये मुझको नहीं छोड़ता,
बाहर–अन्दर मुझे ताड़ता..

श्री साई अमृत कथा में 'भाईजी' सुमीतभाई पोंदा बताते हैं कि जितना प्रबल हमारा अहंकार होता जायेगा, उतना मुश्किल अपने ह्रदय में साई को बिठाना होता जायेगा. अहंकार दरअसल हमारा ही प्रत्यक्ष विस्तार होता है लेकिन हमारे मन–मस्तिष्क से बहुत ज्यादा ताक़तवर. हमारे सारे अस्तित्व पर छा जाता है और हमारे वजूद पर पूरा नियंत्रण कर लेता है.

हमारा अहंकार हमें वो होने का आभास दे देता है जो हम हैं ही नहीं. सारे फसाद की जड़ वही होता है. हमारे अन्दर इतनी जगह घेर लेता है कि हमारे अपनों के लिए हमारे अन्दर ही कोई जगह नहीं बचती. अपनी नज़र में हम इतने ताक़तवर हो जाते हैं कि हमें लगता है कि दुनिया हम से ही शुरू और हम पे ही ख़त्म हो जाती है. ऐसी खुशफ़हमी हो जाती है कि दुनिया में हमें किसी की ज़रुरत नहीं पड़ेगी. दूसरों को नीचा देखने लगते हैं, स्वयं को बहुत ऊपर. कोई हमारे सामने टिकता नहीं दिखता. ज़बान में कड़वाहट और स्वर में कटुता आ जाती है. अपने ही साथ बहुत मज़ा आने लगता है और दूसरों का साथ ख़लल डालता है. पत्नी, बच्चे, माँ, पिता, मित्र सब दूर होने लगते हैं और आखिर में जब हमें अपनों के दूर हो जाने का अहसास होता है तब हम कितनी ही आवाज़ दें, उनको सुनाई नहीं देती. पश्चाताप में हाथ मलते रह जाते हैं लेकिन दिल से निकलते आंसू भी उन दूरियों को कम नहीं करते.

जैसे किसी घर में अँधेरा हो, तो मेहमान घंटी नहीं बजाते, वैसे ही जब मन में अहंकार भरा हो तो साईनाथ नहीं आते.

उन्हें दूषित जगह रहना पसंद ही नहीं. उन्होंने दासगणु महाराज का घमंड तोड़ने के लिए ईशावास्य उपनिषद की व्याख्या काकासाहेब दीक्षित की नौकरानी नाम्या की बहन मलकरणी से करवाई. इन्ही दासगणु महाराज के कीर्तन करने के समय पहने जाने वाले कपड़ों पर बाबा ने व्यंग्य कर उन्हे सादगी–परस्त होने का मार्ग दिया. इसी तरह ब्रम्हज्ञान की इच्छा रखने वाले सेठ को उसकी प्राप्ति के लिए पांच प्राण, पांच इन्द्रियां, मन बुद्धि और अहंकार का त्याग करने का उपाय बताया. बापूसाहेब बूटी, बाबू तेंदुलकर और दामू अन्ना के ज्योतिषियों के दंभ को तोड़ उनकी भविष्यवाणी के विपरीत लेकिन कारगर फल दिए तो कहीं नानासाहेब चांदोरकर के पंढरपुर जाने की सूचना से पूर्व यह बात उन्हें बता कर अपने करता होने का परिचय दिया.

दरअसल, साई की खासियत है कि वो हमें हमारी औकात से ज़यादा देता है. हम पर इतनी कृपा करता है कि हम भूल जाते हैं कि साई हमारी परीक्षा ले रहा है. वो हमें और भी ज्यादा देने से पहले परखना चाहता है कि हम उसकी कृपा के लायक है भी कि नहीं. इस परीक्षा में भी वो हमारी सहायता करता है, इशारे से सुझाता है. यह हम पर है कि हम उसका इशारा समझ सके.

साई को अपने मन में जगाना ही साई को पाना है जो कुछ भी और पाने से बहुत ज्यादा है. सवाल यह है कि वो तो देना चाहता है लेकिन क्या हम लेने के लिए तैयार हैं? सोचें.

श्री सद्गुरु साईनाथार्पणमस्तु. शुभं भवतु.

(श्री साई अमृत कथा, कोपरगांव, जून 2015 के प्रमुख अंश)

कथा करवाने हेतु संपर्क: 09200009112, 09200009114, 09200036111 08989099789 facebook.com/saiamritkatha
info@saiamritkatha.com YouTube shree sai amrit katha saiamrit.blogspot.in www.saiamritkatha.com

बातें एक फ़क़ीर की..

श्री साई अमृत कथा

उदी राख होकर भी जीना सिखाती है

श्री साई अमृत कथा में 'भाईजी' सुमीतभाई पोंदा बताते हैं, साई जिसे भी शिरडी बुलाते हैं, उसे साई की धूनी की राख, जिसे साई के भक्त उदी कहते हैं, साथ में लेकर आने की ललक रहती है. कतार में खड़े, साई के दीवाने इस उदी को मिलने पर माथे पर लगाते हैं, पानी में घोल कर पी लेते हैं, किसी भी शुभ कार्य में जाने से पहले उसे ज़रूर अपने साथ रखते हैं, काफी सारे तो उसे रोज़ ही सवेरे–शाम अपने माथे लगाकर धन्य महसूस करते हैं. दाभोलकरजी द्वारा रचित पावन ग्रन्थ, श्री साई सच्चरित्र, में उदी के कई सारे चमत्कारों का उल्लेख भी मिलता है.

ये चमत्कार आज भी होते रहते हैं. बाबा की धूनी की उदी आज भी रामबाण औषधि है, संकट हरती है, कल्याण करती है और साई के सदा जीवित होने और उनका अपने भक्तों के साथ सदैव होने का सतत अहसास कराती रहती है. आज भी पूरे के पूरे कई ग्रन्थ इस उदी के चमत्कारों पर लिखे जा सकते हैं.

इतिहास गवाह है कि साई ने अपने दूसरे प्रवास में शिरडी की उस टूटी–फूटी इमारत, जो कि एक ज़माने की मस्जिद थी और कई सालों से इसमें इबादत होना बंद हो चुकी थी, को अपना ठिकाना बना लिया. इसे बाद में बाबा ने मस्जिदमाई कहा और अपने अनगिनत चमत्कारों, कर्मो और अपने जीवन के साथ–साथ समाधि का भी साक्षी बनाया.

इसी जगह को बाद में लोगों ने अपनी योग्यतानुसार और प्रारब्ध के चलते ज्ञान, काम, अर्थ और मोक्ष पाने का साधन मानते हुए द्वारिकामाई कहा. इसी पावन स्थान साई ने एक नित्य अग्निहोत्र के समान धूनी पूरे समय जलाए रखी. बाबा के हाथ से प्रज्ज्वलित यह धूनी आज भी अनवरत जल ही रही है. बाबा भक्तों से जो दक्षिणा लेते, उससे मुख्यत: इस धूनी के लिए लकड़ियाँ मोल लेते. बाबा पूरे समय अपने हाथों से इस धूनी में लकड़ियाँ डालते रहते. यह क्रम बाबा की समाधि के बाद उनके कई भक्तों ने निभाया और अब साई बाबा संस्थान इस धूनी की पवित्र आग को जलाए रख रहा है.

बाबा जब शिरडी में नए–नए आए थे तो उन्होंने लोगों के रोगों का इलाज अपनी अनोखी चिकित्सीय विधा से किया लेकिन जब लोगों की भीड़ शिरडी में बढ़ने लगी तो बाबा ने इसी धूनी से मुट्ठी भर–भर राख लोगों को देना शुरू कर दिया और इस राख ने तो चमत्कार कर दिए. इसी राख ने कितनों को ना जाने नयी ज़िन्दगी दी और कितनों को ही रोग–मुक्त किया. कईयों के बिगड़े काम बने तो कईयों को खोया भाग्य मिला.

कई भक्तों के तो भाल पर बाबा अपने हाथों से उदी लगाते. यहाँ तक कि अपने घोड़े श्यामसुंदर को भी पालकी के लिए चलने के समय प्यार से उदी लगाते. बड़े प्यार से बाबा खुले हाथों से उदी बांटते और गाते.."रमते राम आओजी, उदियाँ की गुनिया लाओ जी.."

शायद बाबा उदी में हमारे जीवन का सार समझते थे और सदैव उनका प्रयत्न ऐसा ही रहता था कि हम सभी जीवन की क्षण–भंगुरता को समझें. यह परम सत्य है कि मृत्यु सभी को आनी है और इसका कोई भी समय निश्चित नही है. हम सभी को एक ना एक दिन राख में तब्दील हो जाना है. अरबोंपति हो या फकीर, सभी की राख एक मुट्ठी बराबर ही होती है. फिर काहे का दंभ करते हैं हम सब!? चिता की आग, सभी को एक बराबर समझती है. सभी का अंत वही है. लेकिन जिस तरह उदी राख होने के बावजूद भी उसको माथे पर लगाया जाता है और राख होने पर भी वह कल्याणकारी होती है, ऐसा किरदार हम सभी का क्यों नहीं हो सकता? क्यों हम ऐसा जीवन न जियें, जिसमे करुणा, प्रेम, आत्मीयता, क्षमा, शांति और एकात्मता का भाव हो जो हमारे जीते जी ऐसी मिसाल बन जाए जिसे हमारे होने पर लोग आदर्श मान कर हमारे जैसे बनने का प्रयास करें और राख होने पर भी हमारा जीवन और उसमे किये कार्य, लोगों का कल्याण करें.

बाबा की उदी यही भाव सिखाती है..

श्री सद्गुरु साईनाथार्पणमस्तु. शुभं भवतु.

(श्री साई अमृत कथा, कोपरगांव, जून 2015 के प्रमुख अंश)

कथा करवाने हेतु संपर्क: 09200009112, 09200009114, 09200036111 08989099789 facebook.com/saiamritkatha
info@saiamritkatha.com YouTube shree sai amrit katha saiamrit.blogspot.in www.saiamritkatha.com

बातें एक फ़क़ीर की..

श्री साई अमृत कथा

साई सद्गुरु हैं

श्री साई अमृत कथा में 'भाईजी' सुमीतभाई पोंदा बताते हैं कि शिरडी के साई बाबा को सद्गुरु कहा जाता है जो कि गुरुओं की श्रेणी में, गुरु गीता के अनुसार, गुरु का सर्वोच्च प्रकार है. सवाल यह उठता है कि क्यों साई को गुरुता की सर्वोच्च पायदान माना जाता है. शास्त्रों के अनुसार गुरु का अर्थ होता है, अन्धकार मिटाने वाला. 'गु' मतलब 'अन्धकार' और 'रु' का मतलब होता है नष्ट करने की क्रिया. इसी प्रकार दीक्षा का अर्थ होता है, अज्ञान को हटा कर ज्ञान को स्थापित करना. 'दी' मतलब ज्ञान देने की क्रिया और 'क्षा' का अर्थ होता है धब्बों को क्षय.

गुरु वो नहीं जो ज्ञान दे बल्कि गुरु वो होता है जो अज्ञान में से 'अ' रुपी अशुद्धि को हटा कर ज्ञान को उजागर करे. ठीक उसी तरह जिस तरह दूध में मक्खन तो होता है लेकिन दिखता तब ही है जब दूध को बिलोया जाता है. ठीक उसी तरह जिस तरह एक बीज में तना, पत्ते, फल, फूल, जड़, जीवन यानि पूरा पेड़ समाहित होता है लेकिन दिखता वो तब ही है जब उस बीज की पूरी देखभाल हो और उसे उर्वरक दे कर समयानुसार सींचा जाए. जिस तरह कोयले में हीरा होता है पर दिखाई वो तब ही देता है जब उसे तराशा जाए. सद्गुरु का काम ठीक यही है.

जब हम पैदा होते हैं तो हमें छल, कपट, बैर, क्रोध, लालच, वैमनस्य, आसक्ति, इत्यादि इन भावों के बारे में कुछ भी नहीं पता होता. हम पालने में पड़े–पड़े मुस्कुराते रहते हैं या अप्रिय महसूस या भूख लगने करने पर रोते हैं, बेवजह खिलखिलाते हैं, भोले–भाले होते हैं लेकिन जैसे–जैसे हम बड़े होते जाते हैं, दुनिया से हमारा वास्ता पड़ता है, हम मानुषिक स्वभाव के चलते वो सभी कुछ सीखते चलते हैं जो हममें दोष लगाता है. हमारा मूल स्वरुप तो स्वच्छ है, दोष तो हम ओढ़ लेते हैं. मूल स्वरुप से तो हम सुखी ही होते हैं लेकिन इन दोषों के कारण स्वभाव से दुखी होने लगते हैं. भटकने लगते हैं. अपना पथ छोड़ देते हैं. अच्छाइयों से विमुख हो जाते हैं. दूसरों को तो तकलीफ देते ही हैं, साथ में खुद को भी दुखी करते हैं.

इसी अँधेरी राह की गलियों में भटकते हम थक–हार कर जब निढाल हो बैठते हैं और जब मन ही मन हम अपने अन्दर सुधार करने को प्रबल हो उठते है तो कहीं से, किसी भी बहाने से, किसी भी रूप में कोई ऐसा सामने आ खड़ा होता है जो हमारा हाथ पकड़ता है. वह समय भी हो सकता है और कोई हमारा अपना भी या फिर एकदम ही कोई अपरिचित जो हमें सद्गुरु की राह पर ले चलता है..या फिर धकेल देता है. बस. उसका काम वहीं पर समाप्त हो जाता है.

'अ' हटाने की राह पर हमें अब अकेला ही चलकर सद्गुरु तक पहुंचना होता है. प्रेरणा, शक्ति, सामर्थ्य, बल देते हुए स्वयं सद्गुरु हमें अपनी और खींचता है. रौशनी भी वही देता है, रास्ते भी वही बनाता है. उसके पास पहुँचते–पहुँचते पश्चाताप, संताप, प्रायश्चित, नयन–नीर के रास्ते हमारे दोष धुलने लगते हैं. सद्गुरु के सान्निध्य में आकर लगता है जैसे बरसों से प्यासे चातक को अमृत–बूँद मिल गयी हो, वर्षों से सूखे मरुधर में पानी की नहर फूट पड़ी हो, छालों पर ठंडक पड़ जाने सा अ[illegible] बहने लगता है, शरीर में रोमांच भर उठता है, मन में आह्लाद की स्थिति बन जाती है, भाव–विचार–भाषा बदल जाते हैं, कटुता कटने लगती है, ममता की जगह समता का भाव आने लगता है. मन सद्गुरु के ख्यालों से भर उठता है. यह सब कुछ साई के मन में उदय होने के लक्षण हैं.

श्री सद्गुरु साईनाथार्पणमस्तु. शुभं भवतु.

(श्री साई अमृत कथा, [illegible])

अहसास होने लगता है कि साई हमसे और हम साई से जुदा नहीं. वो हमारे अन्दर ही बसता है, हम सिर्फ उसे सुप्त रखते हैं. उसे जागने से रोकते हैं. शिरडी में विश्राम कर रहा साई कभी चित्र बन कर तो कभी मूर्ती बनकर, कभी भजन के रास्ते तो कभी वचन के रास्ते, कभी किसी की हँसी बन कर तो कभी मुस्कराहट बन कर मन में कब समा जाता है, पता ही नहीं चलता.

दूध मक्खन में तब्दील हो जाता है, कोयला हीरा बन जाता है, बीज पेड़ बन जाता है. सद्गुरु अपना काम कर चुका होता है. हमें वापस अपने मूल स्वरुप में ले आकर हमें फिर से सुखी कर देता है. यही तो काम है सद्गुरु का. अपने आप को ख़ुद से मिला देना.

बातें एक फ़क़ीर की..

श्री साई अमृत कथा

नित्य सुख, शांति और आनंद का नाम

साई है

श्री साई अमृत कथा में 'भाईजी' सुमीतभाई पोंदा बताते हैं कि हमारा जीवन मुख्यत: तीन हिस्सों में बंटा होता है. कल, आज और कल. वो कल जो गुज़र गया और हल पल गुज़रता जा रहा है. वो आज जो हम जी रहे हैं और वो कल जिसमें हम प्रतिक्षण जा रहे हैं.

कल जो गुज़र गया है, वो हमारी स्मृतियों में स्थिर हो जाता है, हमारे अनुभव के अनुसार, अच्छी या बुरी तस्वीर बन कर. यह स्मृतियाँ अक्सर दुखदायी ही होती हैं. किसी ने हमारा अपमान कर दिया है तो उस अपमान को हम याद करते ही रहते हैं. किसी ने तो हमारा अपमान एक बार किया है लेकिन उस अपमान को रोज़ याद करके हम खुद को रोज़ अपमानित करते रहते हैं. किसी ने अगर हमें दु:ख दिया है तो हम रोज़ – रोज़ उस को याद कर दुखी होते रहते हैं. मन ही मन यह मनाते हैं कि कब हमें भी मौका मिले और हम उस अपमान का, उस दुख का, उस अनुभव का हिसाब बराबर कर सकें. माफ़ करना इतना सरल अगर होता तो यह नहीं कहा जाता कि क्षमा तो वीरों का आभूषण है. उस दुखदायी घड़ी का बोझ अपने सर पर लादे–लादे निराश, निढाल घूमते रहते हैं, शोक मानते रहते हैं. यह भूल जाते हैं कि यह उस पल, जो गुज़र गया है, को हम चाह कर भी नहीं बदल सकते. इसी शोक को रोज़– रोज़ जीते–जीत हम अपने आज और आने वाले कल में भी रीस कर आने का अवसर दे देते हैं. यह दु:ख, शोक हमारे सुख का रास्ता रोक देता है, यह याद रखना होगा.

इसी तरह, वर्तमान की चिंता हमें उस घड़ी का आनंद मनाने से रोक देती है जो वाकई हमारी पकड़ में है. वर्तमान ही वो पल है जिसको हम जैसे चाहे लिख सकते हैं क्योंकि जो बीत गयी, सो बात गयी. जो आने वाला कल है वो अनिश्चित है. उसे चाह कर भी हम नियंत्रित नहीं कर सकते. शायद इसीलिए इस पल को 'प्रेज़ेंट' भी कहते हैं – ईश्वर का तोहफा. लेकिन इस पल में हमें, वो सब जिसको हम अपना समझते हैं–अपना परिवार, नौकरी, कारोबार, सम्पत्ति, गाड़ी–घोड़े, पद, मान, कुर्सी, शक्ति, शरीर, इत्यादि –इसको सहेज कर रखने की चिंता में बिता देते हैं. यह जानते हुए भी कि इस संसार में हर चीज़, हर पल बदलती रहती है, उसे पकड़कर रखने की चाहत में हम अपना आज गंवा देते हैं. 'मैं' और 'हूँ' के बीच आने वाली हर चीज़ की चाह हमारे वर्तमान को कष्टप्रद बना देती है.

आने वाला कल, हम सब जानते हैं, कि किसी के बस में नहीं है. और बात तो छोड़िये, हमारी सांसें भी हमारे बस में नहीं हैं. सफ़र का पता नहीं और सामान सदियों का! आने वाले कल की अनिश्चितता हमारे मन में भय बन कर समा जाती है. यह भली–भांति जानते हुए भी कि हम भविष्य को नियंत्रित नहीं कर सकते, हम उस स्थिति का आनंद उठाने के स्थान पर भयभीत होते रहते हैं. भूल जाते हैं कि जब कुछ भी तय नहीं तो सभी कुछ संभव है. सवाल कौंधते रहते हैं. जो आज है अगर वो कल न हुआ तो? ये कुर्सी कल चली गई तो? ये गाड़ी कल ना रही तो? ऐसे ही और ना जाने कितने ही प्रश्न!! मज़े की बात तो है कि हम स्वयं इन का कोई भी उत्तर कभी नहीं दे सकते लेकिन फिर भी नादानी करते ही रहते हैं. यह भय शांति का रास्ता रोक देता है.

इस दु:ख, चिंता और भय से हम परे नहीं रह सकते क्योंकि यह मनुष्य योनी में जन्म का आशीर्वाद भी है जिसे हम श्राप बनाकर जीते रहते हैं. मनुष्य योनी में जन्म का आशीर्वाद है जिसे हम भूल जाते हैं और वो है सुख, आनंद और शांति में जीने का.

साई जैसे सद्गुरु की शरण में जाकर इस व्याधि का उपचार मिल जाता है. साई का चोला ओढ़ने की देर है. मन में असीम शांति का अनुभव होने लगता है. कड़वे अनुभव माफ़ी की लौ में पिघलने लगते हैं. दुश्मन को माफ़ कर हम खुद अपने आप को उसके नियंत्रण से आज़ाद कर देते हैं. दुखदायी स्मृतियाँ क्षीण होने लगती हैं. अतीत का काँटा साई के दुलार से खुद ही निकल जाता है. अपना रिमोट कंट्रोल हम परिस्थितियों के हाथों से छीन साई के हाथों में दे देते हैं.

आज की और अपनों की चिंता से मुक्त हो जाते हैं जब सारी चिंताएं हम साई पर छोड़ देते हैं. साई में भक्ति ऐसा ही अभयत्व प्रदान करती है. हमें यह महसूस होने लगता है कि जो कुछ भी हम अपना या अपना कमाया हुआ समझते थे, वह दरअसल साई की कृपा और उसके कारण किये गए हमारे अच्छे कर्मों से प्राप्त हुआ है और इसीलिए जो साई का दिया है, उसकी रक्षा खुद साई की ज़िम्मेदारी है. हमें को सिर्फ निर्लिप्त भाव से कर्म करते जाना है और उसे साई को समर्पित करते जाना है. साई खुद ही सम्हालेंगे.

भविष्य साई को सौपने से हम निश्चिन्त हो जाते हैं. यह निश्चिंतता हमें निश्चित की ओर ले जाती है जिससे भय का निवारण हो जाता है. साई के चरणों में कैसा भय?

श्री सद्गुरु साईनाथार्पणमस्तु. शुभं भवतु.

(श्री साई अमृत कथा, कोपरगांव, जून 2015 के प्रमुख अंश)

कथा करवाने हेतु संपर्क: 09200009112, 09200009114, 09200036111 08989099789 facebook.com/saiamritkatha
info@saiamritkatha.com YouTube shree sai amrit katha saiamrit.blogspot.in www.saiamritkatha.com